तक रहा है । यह मूल्य 3.66 रूपए प्रति कि.ग्राम है या 183 रूपए प्रति 50 कि.ग्राम का बैग है जिसके साथ राज्य बिक्री कर,यदि कोई हो,भी लिया जाता है ।

इसी प्रकार,कुछ फास्फेटिक और पोटेसिक उर्वरक भी किसानों को निर्दिष्ट मूल्य पर उपलब्ध है क्योंकि भारत सरकार उनकी लागत पर राजसहायता देती है । यह निर्दिष्ट मूल्य 1.4.1997 से बदला नहीं गया है ।

"नर्म कपास" में बीमारी

2446.**श्री ओंकार सिंह लखावत**: क्या प्रधानमंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार को वर्ष 1997 के दौरान राजस्थान के हनुमानगढ़ और गंगानगर जिलों में नर्म कपास की फसल में बीमारी फैलने की जानकारी है;

(ख) यदि हां,तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या हैं;और

(ग) इस संबंध में क्या उपचारात्मक तथा दीर्घकालिक उपाय किए गए हैं और तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री(श्री सोम पाल): (क) और(ख) राजस्थान सरकार से प्राप्त सूचना के अनुसार,1997 के दौरान गंगानगर जिले में कपास की फसल को 50% की हानि हुई थी और नर्म कपास की फसल के संबंध में हनुमानगढ़ जिले में 50 से 75% की हानि हुई जिसका कारण फसल में अमरीकी बौल-वोर्म,व्हाईट फलाई और पर्ण कुचन वाइरस रोग लगना हैं ।

(ग) पर्ण कुचन वाइरस रोग के नियंत्रण के एक उपचारी उपाय के रूप में 117 हैक्टेयर क्षेत्र में 1872 कि.ग्रा.इमीडेक्लोप्रिड से उपचारित बीज़ बोए गए हैं । इसके अतिरिक्त,एल.आर.ए.-5166 किस्म के पर्ण कुचन वाइरस प्रतिरोधी बीज़ों के 2000 मिनिकिट नि:शुल्क वितरित किए गए हैं ।

दीर्घावधि उपायों में 234 प्रदर्शनों का आयोजन किया जाना शामिल है ताकि किसानों को इमीडैक्लोप्रिड से उपचारित बीजों के उपयोग में शिक्षित किया जा सके । पश्चिमी अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर 20:20 कि.मी.क्षेत्र का एक बफर जोर रेखांकित किया गया है जहां कपास की प्रतिरोधी किस्में उगाने को लोकप्रिय किया जा रहा है ।

अमरीकी बौल-वोर्म और व्हाइट फ्लाई जैसे कीट-कृमियों के नियंत्रण के लिए पारिस्थितिक रूप से अनुकूल जैव-नियंत्रण एजेंटों और जैव-कृमिनाशियों की सिफारिश की जा रही है और प्रदर्शन प्लाटों पर उनके प्रयोग को प्रदर्शित किया जा रहा है ।

राजस्थान में सरसों की फसल को क्षति पहुंचना

2447.**श्री ओंकार सिंह लखावत**: क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार को इस बात की जानकारी है कि राजस्थान में अनेक बीमारी और अति वृष्टि के कारण सरसों (रायड़ा) की फसल पूर्णत: चौपट हो गई है और इसका उत्पादन बहुत ही कम हुआ है;और

(ख) क्या सरकार ने सरसों की फसल को रोली और बीसिया व्याधियों से बचाने के प्रबंध किए हैं;यदि हां,तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री सोम पाल): (क) राजस्थान सरकार ने सूचना दी है कि 1997-98 के दौरान राजस्थान में व्हाइट रस्क रोग तथा एफिड्स नामक कीट के कारण 25-30 प्रतिशत सरसों (रायड़ा) की फसल की क्षति पहुंची है ।

(ख) राजस्थान सरकार द्वारी दी गई सूचना के अनुसार भविष्य में व्हाइट रस्ट रोग तथा एफिड्स नामक कीट से सरसों की फसल को बचाने के लिए निम्नलिखित प्रबंध किए गए हैं:-

(1) विस्तार तंत्र तथा किसान गोष्ठियों के जरिये राज्य के कृषि विभाग द्वारा इस रोग तथा कीट एंव इनके नियंत्रण के तरीकों के संबंध में किसानों को प्रशिक्षित किया गया हैं ।

(2) किसानों को इस कीट तथा रोग के संबंध में सूचित करने और कृषि विभाग द्वारा सस्तुंत नियंत्रण उपाय शुरू करने के लिए स्थानीय समाचार-पत्रों,आकाशवाणी,दूरदर्शन आदि का प्रयोग किया गया हैं । विभाग ने पौध सरंक्षण उपायों के लिए पुस्तिकाएं तैयार की हैं और इन्हें कृषि कार्यकर्त्ताओं और किसानों को वितरित किया है ।

(3) एफिड्स तथा व्हाइट रस्ट के नियंत्रण हेतु अपेक्षित कीटनाशी दवाओं के लिए राज सहायतादी गई है तथा अधिकांश प्रभावित क्षेत्रों में दो छिड़काव किए गए हैं ।